आवाज़ आज़ादी कीः

फैनी लू हेमर

नागरिक अधिकार आन्दोलन की आत्मा

लेखनः कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड, चित्रः एक्वा होम्स
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

“हम कठोर मेहनत करते हैं, पर पाते कुछ नहीं,
हालातों को बदलने का कुछ तो तरीका होगा . . .
कुछ और भी तो होगा!”

मिससिपी डेल्टा (नदीमुख) के एक बटाई की खेती करने वाले परिवार के बीस बच्चों में सबसे छोटी थीं फैनी लू। बड़ी होने पर वे नागरिक अधिकार आन्दोलन की एक नायिका बनीं। उन्होंने जुलूसों में भाग लिया, धरनों पर बैठीं, मतदाता प्रशिक्षण किए - और इन्हीं कोशिशों के चलते उन्होंने पुलिस की बेरहम मार खाई, उन्हें जेल में ठूंसा गया, और तो और उनके घर पर बन्दूकें तक दागी गईं।

1964 में फैनी ने मिसिसिपी की फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी की सदस्य होने के नाते डैमोक्रैटिक राष्ट्रीय सम्मेलन की क्रिडैन्शियल (प्रत्यय) समिति को संबोधित किया। उन्होंने तीन बार चयनित पदों के लिए चनाव लड़ा। मैल्कम एक्स ने उन्हें “आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाली देश की अव्वल स्त्री” कहा।

प्रेरणादायी शब्दों व जीवन्त चित्रों के माध्यम से *आवाज़ आज़ादी की फैनी लू हेमर* तथा उनकी विरासत का जश्न मनाती है।

आवाज़ आज़ादी कीः

फैनी लू हेमर

नागरिक अधिकार आन्दोलन की आत्मा

लेखनः कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड
चित्रः एक्वा होम्स
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

दो निर्भीक योद्धाओं - मेरी माँ और मेरी बेटी के लिए, तथा मेरे पिता जोसेफ बॉस्टन जूनियर, व मेरे नाना रेवरेंड लुन पी. व्हीटन की स्मृति में।

-सी.बी.डब्ल्यू.

मेरी माँ फ्लोरेन्स पी. होम्स् के लिए जिन्होंने मुझे अपने पथ पर बढ़ने को, अपना श्रेष्ठतम करने को प्रोत्साहित किया और यह विश्वास दिलाया कि दरवाज़े सही समय पर खुलेंगे।

-ई.एच.

"इस देश में इस वक्त जो वस्तु सबसे खरी है, वह है नन्हे बच्चे . . .
अगर वे सोचते हैं कि आपने कोई गलती की है,
तो वे आपको बता देंगे!

-फैनी लू हेमर

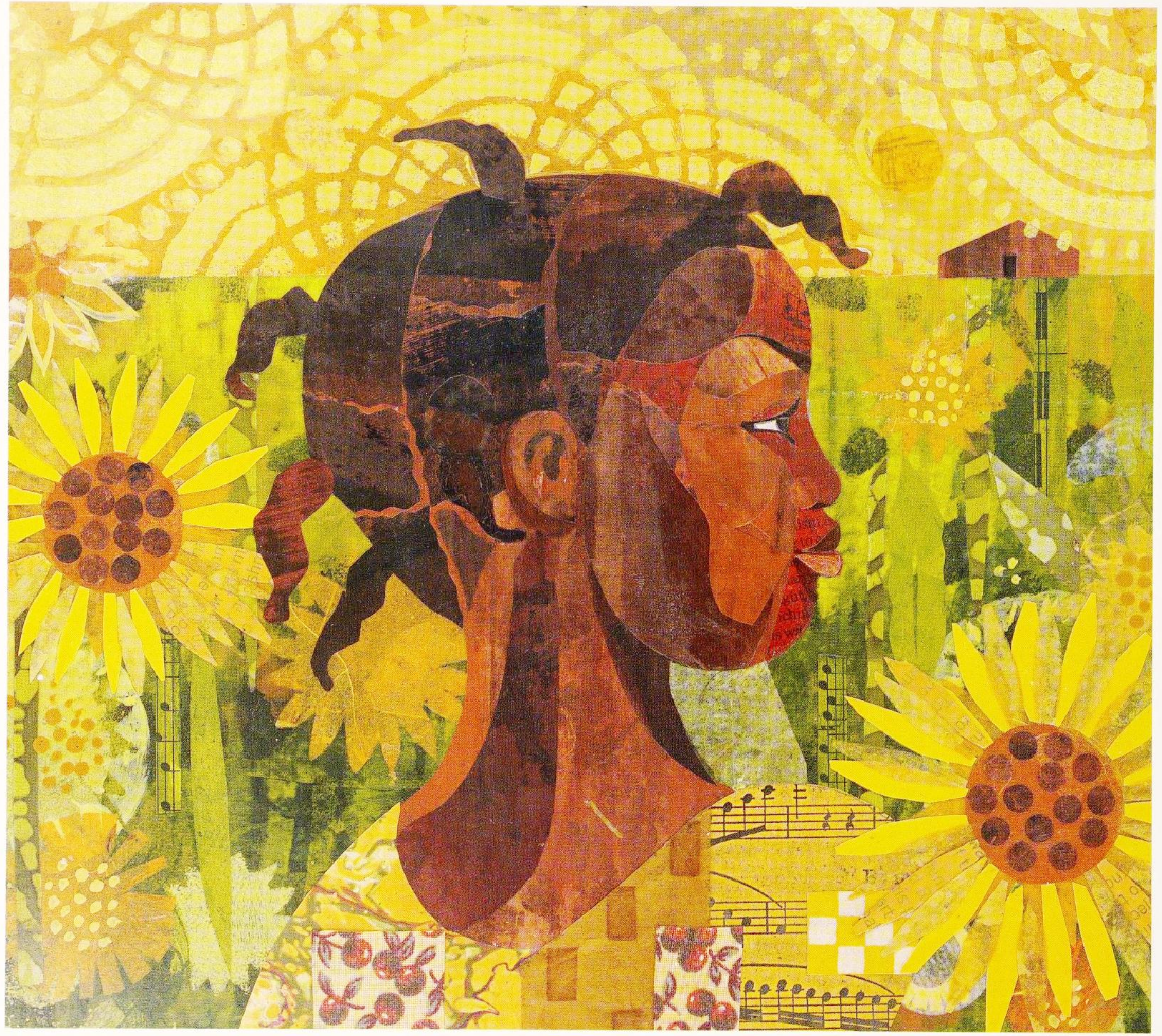

सनफ्लावर काउंटी, मिसिसिपी

पादरी मैल्कम एक्स ने मुझे
आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाली, देश की अव्वल स्त्री कहा था।
पर मेरे शुरुआती जीवन में कुछ भी ऐसा नहीं था
जो आपको यह सोचने देता कि हमारे इलाके के परे कोई मेरा नाम तक जानेगा।
मिसिसिपी, यहीं मैं पैदा हुई थी।
मैं अपने माता-पिता के बीस बच्चों में सबसे छोटी थी।
मेरे पिता जेम्स और माँ लू एला टाउनसैंड
डेल्टा के सनफ्लावर काउंटी में बटाई की खेती करते थे,
जहाँ माटी उतनी ही समृद्ध थी जितने हम काले गरीब थे,
जहाँ कपास राजा था और कालों पर जिम-क्रो कानून लागू थे।
जब मैं 6 अक्तूबर 1917 में पैदा हुई, प्लान्टेशन के मालिक ने
खेत में एक और काम करने वाली को पैदा करने के लिए मेरी माँ को पचास डॉलर दिए।
उस पैसे ने मेरे परिवार की मदद सर्दियाँ गुज़ारने में की।
मैं इस बात का सबूत हूँ कि डेल्टा ने ब्लूज़ (कालों के विलाप गीत) को जन्मा।

डेल्टा ब्लूज़

मैं महज छह साल की थी जब मैंने अपना पहला झोला
कपास की कतारों के बीच घसीटा।
मेरा परिवार - हम सारे के सारे बाईस जने, खेत में काम करते थे।
करने को और कुछ था भी नहीं।
वहाँ कारखाना कहलाने वाली चीज़ें नहीं थीं।
सूरज के उगने से उसके डूबने तक, ओस से अंधेरे तक,
देख पाने से न देख पाने तक, बीस फुट लम्बे झोले,
हमारे कंधों पर कपास की मीलों लम्बी कतारों की
ओर से छोर तक टंगे रहते।
हम कपास को उसके फूलों के बीच से चुनने नीचे झुकते
उसके सूखे हिस्से हमारी उंगलियों के जोड़ों
और कलाइयों को खुरचते।

हम मौसम के दौरान पंद्रह टन कपास चुनते,
पर अपनी ज़िन्दगी को रत्ती भर आगे न बढ़ा पाते।
पता ही था कि तराज़ू का पलड़ा हमेशा ही
मालिक के पक्ष में झुका रहेगा। हमारा तथकथित हिस्सा
कभी उस राशि को चुकाने लायक न होता, जो हमने
बीज-खाद, खाने-कपड़े और दूसरी ज़रूरतों के लिए
मालिक से उधार ली थी।
हर साल स्थिति वही होती थी।
हम काले लोग हाड़तोड़ मेहनत करते, पर उस मेहनत
के नाम पर दिखाने के लिए हमारे पास कुछ नहीं होता।
जो भी सुनता उससे मैं कहती कि
बटाईदारी गुलामी का ही एक भद्र रूप है,
गोरे हमें अब भी बेड़ियों में जकड़े रखते।

लाड़ से बिगड़ी

मैं सबसे छोटी थी, और मेरी माँ
किसीको यह भूलने नहीं देती थी।
वह मेरी बहनों और मेरे भाइयों को
मुझे पीठ पर लाद कर चलने को कहती,
हालांकि मेरा वज़न उनमें से कई से ज़्यादा था।

मैं शैतानियाँ भी करती थी।
जैसे एक बार मैंने पूरी थैली भर
चावल को पकाने चढ़ा दिया,
वह उबल कर नीचे गिरा और
चारों ओर फैल गया।
मेरे पिता इतने नाराज़ हुए कि
मैं उनसे बचने के लिए घर से भाग गई।
मेरी माँ ने उस बार भी मुझे पिटाई से बचाया।

पर मेरे पिता हमेशा इतना संजीदा नहीं रहते थे।
खेत में लम्बे समय तक खटने के बाद भी वे चुटकुले सुनाते थे।
हम मिलजुल कर नई मूंगफली को भूनते और गाते।
कभी वे मुझे रसोई घर की मेज़ पर खड़ा कर देते,
और मैं "हमारी यह नन्ही रोशनी" गाने लगती।
मैं दरअसल काफ़ी इतराती थी।

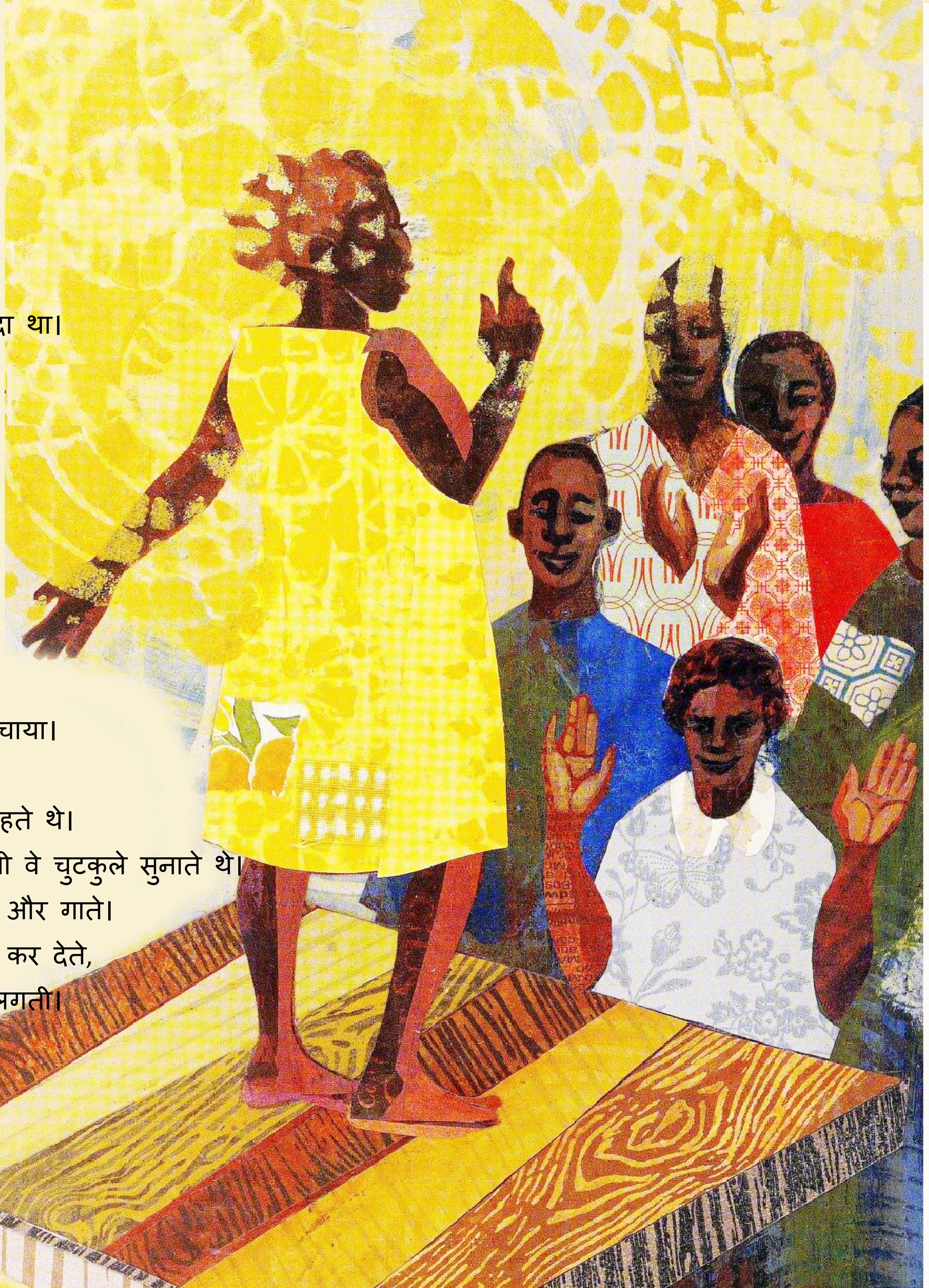

सिखाया मेरी माँ ने

मेरी माँ एक मज़बूत स्त्री थी - वे हमेशा चीथड़े पहना करतीं
जिन पर थेगलियाँ चस्पां होतीं, ताकि उनके बच्चे शालीन लगें।
बचपन से ही मुझे लगता था कि चीज़ें ठीक नहीं हैं।
गोरों के पास खाना, कपड़ा, सब कुछ होता,
जबकि काले जो खटते जाते थे भूखे रहते।
एक दिन मैंने पूछा मैं गोरी क्यों नहीं हूँ,
होती तो मुझे खाने को मिलता।

ऐसा मत महसूस करो मेरी माँ ने कहा।
हम काले होने के कारण ख़राब नहीं हैं।
मैं कुछ समझ पाती उसके पहले माँ मुझे एक काली गुड़िया दी,
और मुझ से कहा मैं चाहती हूँ कि तुम
एक काली बच्ची के रूप में अपना सम्मान करना सीखो।
और जैसे-जैसे बड़ी होती जाओ
एक काली स्त्री के रूप में अपना सम्मान करो।
अगर तुम खुद का सम्मान करोगी,
तभी तो दूसरे भी तुम्हारा सम्मान करेंगे।
सालों पहले मेरी माँ ने मुझे सिखाया था
काला सुन्दर होता है (ब्लैक इज़ ब्यूटिफुल)!

निष्पक्ष

हमारा स्कूल चार महीनों के लिए खुलता था -

दिसम्बर से मार्च तक - जब कपास की देखभाल के लिए

बच्चों की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

मुझे स्कूल अच्छा लगता था, हालांकि उसमें कालों का इतिहास पढ़ाया ही नहीं जाता था।

हमारी पाठ्यपुस्तकें कालों को इस तरह पेश करतीं मानो वे अव्वल दर्जे के बेवकूफ हों। मैं स्कूल में कविता पाठ करती और मैंने कई स्पैलिंग बी (वर्तनी की प्रतियोगिताएं) जीतीं:

फेयर (निष्पक्ष)

कृपया परिभाषा बताएं।

बिना पूर्वाग्रह तथा अन्याय के।

फेयर। एफ-ए-आई-आर, फेयर।

मैं गाती भी थी, छठी कक्षा तक।

पर तब मैंने खेतों में पूरा वक्त काम करने के लिए स्कूल छोड़ा।

मेरे परिवार को खेती में नुक्सान न हो, इसलिए सारे हाथों की ज़रूरत थी।

तेरह साल की उम्र में मैं हर हफ्ते तीन सौ पाउण्ड कपास चुनती थी।

मुझे अपनी स्कूल की किताबों की कमी खलती थी। मैं सड़क किनारे पड़े अख़बारों के टुकड़े बीना करती थी।

सिर्फ इसलिए ताकि पढ़ने को कुछ तो मेरे पास हो। मुझमें जानने-सीखने की ज़बरदस्त भूख थी।

मेरी माँ ने मेरे ज़ेहन में यह बात घुसा दी थी

कि जब आप पढ़ते हो वे कहतीं,

आप जानते हो। तब आप दूसरों की मदद भी कर सकते हो।

हमारी मेज़ पर खाना बहुत नहीं होता था, और माँस तो बिरले ही।

अक्सर हरे पत्तों, प्याज़, अदि का शोरबा और मक्की के आटे की डबल-रोटी, या उसका घोल।

हमारे पड़ौसी माँ को सूअर को मारने में मदद करने की एवज़ में

सूअर की आँतें और पैर देते, या फिर उसका सिर।

हमारे गद्दे कपास के बड़े झोले होते जिनमें मक्की की भूसी या सूखी घास भरी होती थी।

हमारे पास न बिजली थी, न सर्दियों में घर को गरम रखने का उपाय, ना ही पानी का नल।

और ना ही डॉक्टर के लिए इतने पैसे कि यह पता लग सकें कि

आप लंगड़ा क्यों रहे हो। या जब लकड़ी का बारीक टुकड़ा

माँ की आँखों में चुभ जाए,

तो हम उनकी आँखों की नहीं रोशनी बचा पाएं।

एक बार मेरे पिता बचत कर एक गाड़ी, तीन खच्चर -

एला, बर्ड और हैनरी, और दो गायें - मुलैन और डैला खरीद सके।

पर एक गोरे पड़ौसी ने हमारे जानवरों को ज़हर खिला दिया।

उसे कालों को आगे बढ़ते देखना गवारा नहीं था।

इसके बाद हम फिर से नीचे आ गए।

कुत्तों की तरह निहायत गरीब,

बिना चीज़ों के काम चलाने वालों की श्रेणी में।

मेरे माता-पिता को ऊपर उठने का दूसरा मौका नहीं मिला।

मुझे डैला के दूध की कमी खलती थी।

हर कोई उत्तर नहीं जा सका

कठिनाई पर कठिनाई ने
मेरे पिता को थका दिया।
जब तक मैं बाईस की हुई,
हम उन्हें दफना चुके थे।
मेरे ज़्यादातर भाई-बहन
उत्तर जा चुके थे, इस उम्मीद से कि
वे ज़्यादा मेहनताना पा सकेंगे और बेहतर ज़िन्दगी बिता सकेंगे।
मैं उन्हें दोष नहीं दे सकती ।
यहाँ दक्षिण में जिम-क्रो कानून मौके-बेमौके हमारा गला घोंटते थे।
जो कुछ हमें यहाँ नीचे, दक्षिण में मिलता था
कौन उससे बेहतर पाना नहीं चाहेगा।

मैं भी चली जाती,
पर मेरी माँ को देखभाल की ज़रूरत थी।
मुझे यह ख़याल ही नापसन्द था कि
उन्हें किसी परिचर्या गृह (नर्सिंग होम) में भेजा जाए।
वे अपने आठवें दशक में थीं और लगभग अंधी हो चुकी थीं।
जब वे मेरे साथ रहने आईं,
वे कठोर मेहनत से थक चुकी थीं।
मैं कभी उन्हें पढ़ कर सुनाती।
कभी उन्हें उनके सिखाए गीत सुनाती।
ऐसे गीत जो मेरे ज़ेहन में सचमें उतर चुके थे।
गीत जिनका संदेश सशक्त था।
मुझे कभी उत्तर न जा पाने का अफसोस नहीं हुआ।

न एक मिनट, न एक स्वर!

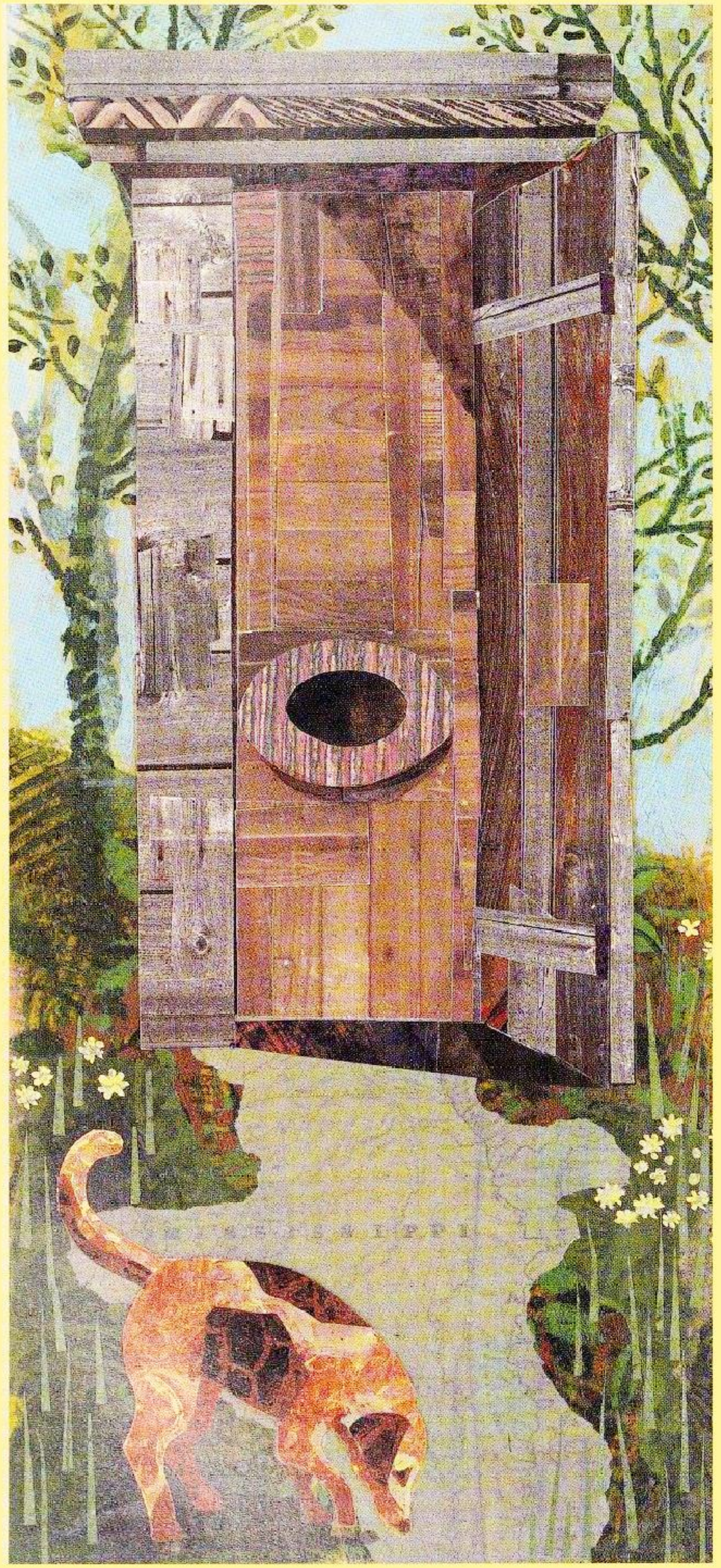

कुत्तों से भी ख़राब हालात

मैंने पैटी हेमर से शादी की - वह 'पैप' नाम से भी जाना जाता था।
वह एक अच्छा इन्सान था, जो अक्सर चुप रहता था।
पर वह चट्टान-सा मज़बूत था।
शादी से मेरा अखिरी नाम ज़रूर बदला, पर दूसरा कुछ नहीं। मैं पैप
के साथ मारलो प्लन्टेशन में रहने लगी जहाँ वह एक ट्रैक्टर चलाता था।
अब मैं दूसरी कतारों के बीच कपास चुनती थी।

मैं सब्ज़ियों और फलों को डिब्बाबन्द करती
और पैप खरगोशों और गिलहरियों का शिकार करता
हम रोहू और मीठे पानी की पर्च मछली पकड़ते।
साथ ही हम मेरे पिता का पुराना मनोरंजन घर भी चलाते,
और अवैध ठर्रा भी बेचते। हमें कभी भूखे नहीं सोना पड़ता,
पर गरीब हम फिर भी थे।

यह बात हमें बर्दाश्त नहीं होती कि मारलो परिवार की कुतिया,
बूढ़ी हनी तक का अपना गुसलखाना था,
जबकि मुझे और पैप को बाहर निपटना पड़ता था।
इसलिए क्योंकि हमारा पखाना टूटा ही बना रहा,
मालिक ने उसे ठीक ही नहीं करवाया।
वह कहता था कि हमें उसकी दरकार नहीं है।

कपास चुनने के अलावा, मैं सबके समय का हिसाब रखती थी।
कितने घंटे काम हुआ, कपास के कितने गट्ठर चुने गए, हरेक को कितना पैसा देना है।
हमारा बॉस तराज़ू में गड़बड़ी कर हम बटाईदारों को धोखा देता था।
जब भी संभव होता मैं अपने तराज़ू का इस्तेमाल करती, ताकि हिसाब सही हो।
पर जब मैं यह नहीं कर पाती, लगता मानो मेरा पेट बोझिल बन गया है।

मातृत्व

1954 में मैंने और पैप ने दो नन्ही बच्चियों को गोद लिया।
डॉरथी जीन और वर्जी रीको।
मैं उन्हें कालों के धर्मगीत (स्पिरिच्युअल्स) सुनाती
ठीक जैसे मेरी माँ मुझे सुनाया करती थी।
दरअसल 1961 में एक डॉक्टर ने छल-कपट से
मेरा एक ऑपरेशन कर दिया था।

जब मुझे होश आया,
मैंने पाया कि डॉक्टर की छुरी ने
एक छोटी गाँठ हटाने से कहीं ज़्यादा बड़ा घाव कर दिया था।
उसने वह हिस्सा ही हटा दिया, जो ईश्वर ने इस दुनिया में बच्चों को
जन्म देने के लिए मुझे दिया था।
मेरी कोख से बच्चे कभी जन्म नहीं लेने वाले थे।

उस वक्त मिसिसिपी में एक कानून था
जो कहता था कि गरीबों को
बच्चे पैदा करने की दरकार ही नहीं है।
उस कानून ने मेरी कोख छीन ली,
पर वह मेरी आवाज़ नहीं छीन सका।

साक्षरता परीक्षा

1962 में मेरी सहेली मेरी टकर ने मुझे
विलियम चैपल चर्च में हुई एक बैठक के बारे में बताया।
चार नौजवान हमारे कस्बे में बाहर से आए।
वे मतदाता पंजीकरण करवाने की समझाइश कर रहे थे।
गिरजे में मौजूद लोगों में से एक ने भी मत नहीं डाला था।
उस समय तक मैं यह जानती भी नहीं थी
कि काले लोग भी मत दे सकते हैं।
जब लोग अपने खेतों से घर लौटते
उनके पास रेडियो होता भी, तो भी वे
इतने थके होते कि उसे चलाने की हिम्मत न रहती।
हमें अपने ही राज्य के बाकी हिस्सों में क्या हो रहा है
उसका पता नहीं होता था,
सो बाकी राज्यों की बात तो छोड़ दो।
पर जब उन नौजवानों ने लोगों से पूछा कि,
कौन-कौन हमारी काउंटी के अदालत घर चल अपना पंजीकरण
करवाने को तैयार है मेरा हाथ झट से उठ गया।
हम कुल अठारह जनों ने अपना पंजीकरण करवाने की ठानी।
मुझमें तो बस जिज्ञासा थी, सो मैं भी गई।

अगर मुझमें तनिक भी सूझबूझ होती, तो मैं थोड़ा तो डरती।
पर डरने से भला क्या फायदा होता?

वे मेरे साथ मुझे मारने के अलावा कर भी क्या सकते थे।
जब से मुझे याद है, लगता था कि वे इसकी ही कोशिश
हर बार थोड़ी-थोड़ी करते ही रहे थे।

एक पुरानी खटारा बस हमें तीस मील दूर इन्डियानोला ले गई।
वहाँ उग्र गोरों की नगर परिषद भी थी।
भौंकते कुत्ते और राइफलधारी गोरे पुरुष हमारी बस के सामने थे।
यह सब हमें डराने के लिए ही था।
अदालत का क्लर्क एक बार में
सिर्फ दो लोगों को अन्दर जाने दे रहा था।
मैं सबसे पहले अन्दर गई,
मुझे पता ही नहीं था कि अन्दर क्या होना है।
मुझे अपना नाम और कार्यस्थल बताना पड़ा।
तब मुझे मिसिसिपी के संविधान के हिस्सों को
पढ़ना, उनकी नकल करना और समझाना था।
मैं तो कानून के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी।
फिर क्या अचरज कि मैं इस परीक्षा में असफल हो गई।
खैर मुझे इतना तो पता चला कि मुझे मत देने का अधिकार है।

बढ़ना आगे

घर लौटते समय एक पुलिस वाले ने
हमारी बस को रोका, ताकि चालक को गिरफ्तार कर सके।
कहा यह गया कि हमारी बस पीली है,
और किसी स्कूल बस जैसी लगती है -
ज़ाहिर था कि यह आरोप झूठा था।
हम सब ने अपनी जेबें खाली कर
पैसे जोड़े और उस झूठे जुर्माने के नाम
के तीस डॉलर चुकाए।
मेरे बॉस ने मेरा सामान घर से बाहर सड़क पर निकलवा रखा था।
उसने कहा कि वे मिसिसिपी में इस सबके लिए तैयार नहीं थे
उसने मुझे विकल्प दियाः अपना नाम अदालत की सूची से हटवाओ
या फिर आगे बढ़ो। मैं इसके सिवा कह क्या सकती थी कि
मैं वहाँ तुम्हारे लिए पंजीकरण करवाने नहीं गई थी,
मैं वहाँ अपनी इच्छा से अपना पंजीकरण करवाने गई थी।

उस रात कुछ देर बाद मैंने अपना घर और परिवार छोड़ा
और टकर परिवार के साथ रहने चली आई।
पर जल्द ही, उसी रात, गोरे आए
उन्होंने मेरे घर पर सोलह गोलियाँ दागीं,
यह सोच कि मैं वहाँ हूँ।

मैं टकर परिवार को जोखिम में नहीं डाल सकती थी।
अगले दो महीनों तक मैं एक से दूसरी जगह जाती रही।
दोस्तों व रिश्तेदारों के घरों में छिपती रही।
तब मैंने कस्बे में अपने परिवार के पास ही
एक जगह किराए पर ले ली।
और जैसे ही मुझे अपना घर मिला, मैं अदालत लौटी
और परीक्षा फिर से दोहराई।
आखिर मैं और क्या खो सकती थी।
वे मेरे साथ अब कुछ नहीं कर सकते थे।
वे मुझे नौकरी से नहीं निकाल सकते थे,
क्योंकि मेरे पास नौकरी थी ही नहीं।
ऐसा कुछ भी नहीं था,
जिसे वे मुझसे छीन पाते।
एक महीने के बाद मैंने सुना
कि मैं परीक्षा में सफल हो गई हूँ।

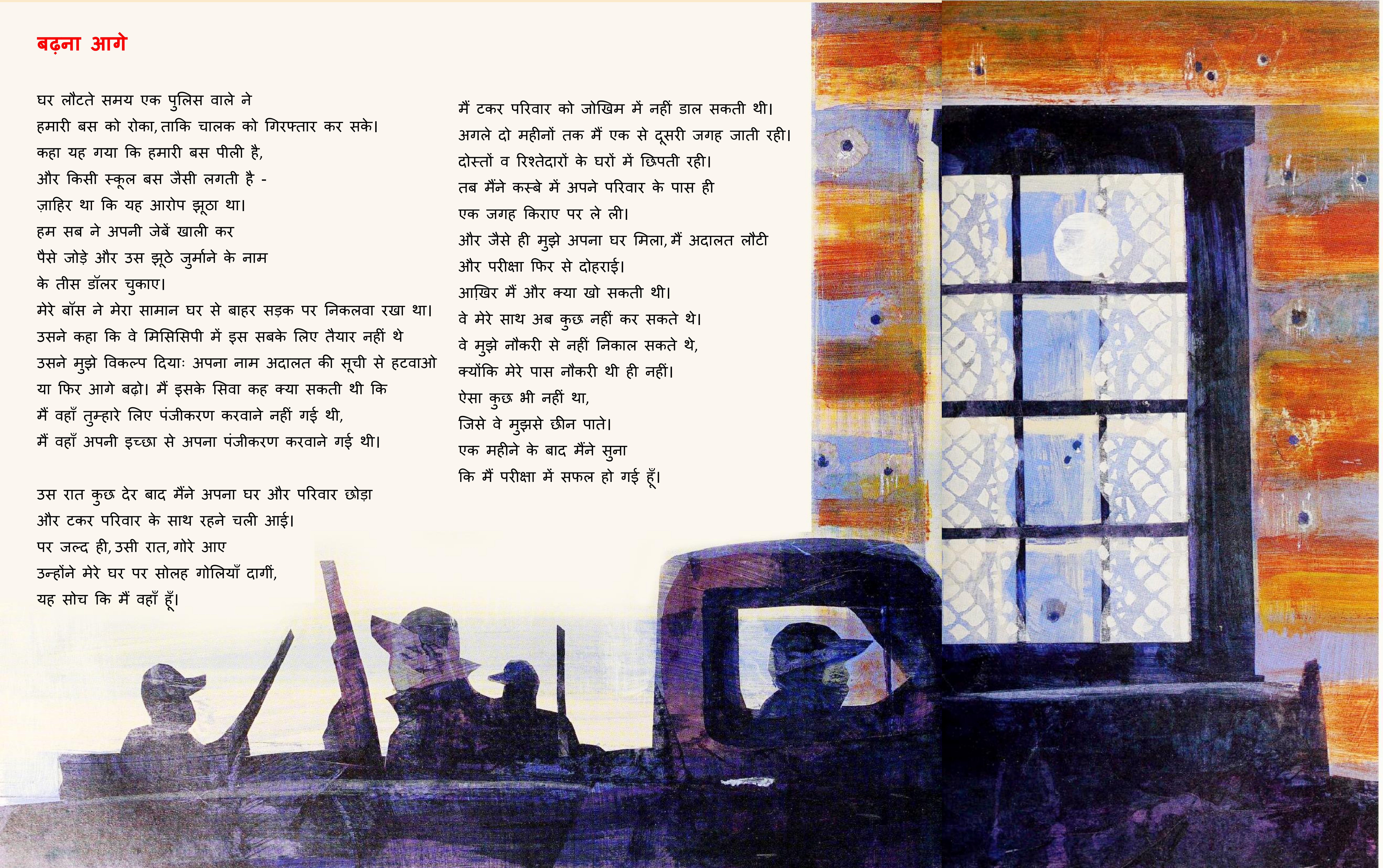

कीमत आज़ादी की

मैं पहली बार मत डाल पाती, उसके पहले मुझे
मतदाता कर चुकाना था - जो मेरे बूते बाहर था।
और अखबार में मेरा नाम छपने के बाद
मुझे खुद को उन रात में घूमने वालों से भी बचाना था
जो बन्दूकें थामे मेरे घर के गिर्द
पिघले गुड़ की तरह धीमे-धीमे चक्कर लगाया करते थे।
अफसोस कि मतदाता पंजीकरण पत्र
घर का किराया नहीं चुका सकता था।
जब पैप की भी नौकरी चली गई,
हम दस डॉलर प्रति सप्ताह से गुज़ारा चलाने पर मजबूर हुए,
जो वे नौजवान मतदान अधिकार कार्यकर्ता
हमारे लिए इकट्ठा करते थे।
जिन्होंने मेरी आँखें, भावी बदलाव के प्रति खोली थीं।
मैं भी उसी रेलगाड़ी पर कूद कर चढ़ चुकी थी।

एसएनसीसी ("स्निक")

वे नौजवान सचमें कुछ अलग ही थे।
उनमें अधिकतर एसएनसीसी के थे,
यानी स्टुडेंट नॉन-वायलन्ट कोऑर्डिनेटिंग कमेटी
(छात्रों की अहिंसक समन्वयन समिति)
जिसे वे स्निक कहा करते थे।
उन कॉलेज के बच्चों को मुझमें एक नेता नज़र आया।
आन्दोलन से जुड़ने के कारण मैंने उन्हें साफ बता दिए थे।
मैं जिन्दगी भर बीमार और तंग रही थी,
और अब बीमार और तंग होने से बीमार और तंग आ चुकी थी।
मैं दक्षिण भर में घूमी, मेरे शब्द मेरे दिल से उठे हुए
और स्पिरिच्युअल गीतों के थे, जो मैंने अपनी माँ से सीखे थे।
मैंने कई बैठकों में हिस्सा लेने वालों को उद्वेलित किया।

इस छोटी सी मेरी रोशनी को चमकने मैं दूंगी,
इस छोटी सी मेरी रोशनी को चमकने मैं दूंगी,
चमकने दूंगी, चमकने दूंगी, चमकने दूंगी।

पर मैं किसीको खुश करने के लिए नहीं गा रही थी
मैं अपनी आज़ादी के लिए गा रही थी।
नेतृत्व मेरे लिए उतना ही सहज था, जितना गाना।
लोग मुझे "नागरिक अधिकार आन्दोलन की आत्मा कहने लगे।

पिटाई

जून 1963 में मैं दक्षिणी कैरोलाइना की
नागरिक शाला में गई।
लौटते समय बस कोलम्बस मिसिसिपी में रुकी।
मैं और दूसरे प्रशिक्षार्थी भूखे थे,
सो हमने बस अड्डे पर ही खाने का फैसला किया।
हमने केवल गोरों वाले काउन्टर से नाश्ता मांगा,
क्योंकि हम जानते थे कि पृथक्करण अब गैर-कानूनी हो चुका है।
काफी देर इन्तज़ार करने के बाद हमें नाश्ता तो परोसा गया,
पर बस चालक ने पुलिस बुला ली।
ओर विनोना की ओर कुछ बढ़ने के बाद
हमें बस से लतिया कर निकाला गया और जेल में डाल दिया गया।

जब मैंने पूछा कि हम पर क्या आरोप है?
पुलिस ने मुझे कहा कि मैं मुँह बन्द रखूं।
उन्होंने हमें अलग-अलग कोठरियों में डाला
और दूसरे बन्दियों से हमें पिटवाया।
वे मुझे लाल-नीले होने तक पीटते रहे।
जेलर ने मुझसे कहा *तुम निगर कुतिया*
तुम्हें तो ऐसे पीटेंगे कि तुम कहोगी कि मौत ही बेहतर है।
दर्द के बीच मैं बाइबल के छन्द दोहराती रही।

एक बन्दी ने तो मुझे तब तक पीटा,
जब तक हम दोनों ही थक न गए।
तब दूसरे ने ठीक यही दोहराया।
डॉक्टर का इन्तज़ार मैंने तीन दिनों तक किया।
आख़िरकार एसएनसीसी ने किसीको हमारी जमानत देने भेजा।
पर पुलिस ने उसे भी जेल में ठूंस दिया।
अंन्ततः दक्षिणी क्रिश्चियन लीडरशिप कांन्फरेन्स के एन्ड्रयू यंग
हमें जमानत पर छुड़वा सके - उसी दिन एसएनसीसी के नेता
मेडगर एवर्स की हत्या उनके वाहन को सड़क पर रोक कर, कर दी गई।
इसलिए क्योंकि वे कालों को उनके अधिकारों की शिक्षा देते थे।
कई लोगों ने कहा कि मेरे गायन ने उन्हें हौसला दिया।

उसी साल नवम्बर में जॉन एफ. कैनेडी की हत्या कर दी गई।
और लिन्डन बी. जॉनसन को राष्ट्रपति पद की शपथ दिलवाई गई।
उन्होंने डॉ. किंग से वादा किया वे वह पूरा करेंगे जो कैनेडी नहीं कर पाए।
जुलाई 1964 को जॉनसन ने नागरिक अधिकार
बिल पर हस्ताक्षर कर उसे कानून में बदल दिया।

आज़ादी के लिए लड़ रहे लोगों का खून उनकी कलम में था!

अन्याय

संघ सरकार ने विनोना पुलिस के
विरुद्ध आरोप दर्ज किए।
मुकदमे में मैंने गवाही दी।
पर गारों की ज्यूरी ने पुलिस का पक्ष लिया।
पुलिस की मार-पिटाई ने सिर्फ
बाहरी चोटें और बुरी यादे नहीं छोड़ी थीं।
खून के एक थक्के से मेरी नज़र कमज़ोर हो गई।
मेरे गुर्दों को भी नुकसान पहुँचा था।
मेरा लंगड़ाना और बुरा हो चला था,
पर मैंने भी संकल्प कर लिया था।
मैं उसी देश की ओर बढ़ रही थी,
जिसका वादा किया गया था।

दौड़

मेरा लंगड़ा पैर भी मुझे उसके पक्ष में
खड़े होने से न रोक सका, जिस पर मेरा विश्वास था।
हमें बदले में बिना कुछ पाए कठोर मेहनत करनी थी
हालात बदलने का कोई तो तरीका होगा . . .
कुछ और तो होगा।
और था भी, खुद एक कानून बनाने वाला बनना।
अगले साल मैं कांग्रेस के लिए खड़ी हुई।
मिसिसिपी फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी की ओर से।
जैसे ही मैंने यह ऐलान किया कि मैं चुनाव लड़ूंगी
मुझे हत्या की धमकियाँ मिलने लगीं।
पर मैं आसानी से डरने वाली नहीं थी।
मैं सिर्फ यह सिद्ध करना चाहती थी कि कोई भी
चाहे वह गोरा हो या काला, गरीब हो या अमीर
अमरीकी राजनीति में जुड़ सकता है।
मैंने पहली बार खुद को ही अपना मत दिया!

आज़ादी की गर्मियाँ

उसी साल, कुछ बाद में मैंने छात्र स्वयं-सेवकों के प्रशिक्षण के दौरान,
उनके साथ कहानियाँ और गीत साझा किए।
ये डेल्टा (नदीमुख) में रहने वाला काला इन्सान होना कैसा लगता है, के बारे में थे।
प्रशिक्षण के बाद उनमें से कुछ छात्र
फ्रीडम समर (आज़ादी की गर्मियाँ) नामक अभियान पर निकले।
और कुछ फ्रीडम स्कूल (आज़ादी की शालाएं) चलाने वाले थे,
जिसमें वे पढ़ना-लिखना सिखाने के साथ
मत देने के अधिकार के बारे में भी बताने वाले थे।

कू क्लक्स क्लैन (गोरे अतिवादियों का संगठन) ने उन छात्रों में से कुछ को मार डाला।
मैं माइकल श्वर्नर और जेम्स चेनी को जानती थी।
उन दोनों और एन्ड्रू गुडमैन को इसलिए मार डाला गया क्योंकि वे
चर्च में आग लगने की वारदात का पता लगाना चाहते थे।
अगर मैं जानती कि उन्हें
बेरहमी से मार डाला जाएगा, मैं उनसे कहती, घर में रहो!
मैं उनकी हत्या पर ऐसे रोई मानो मैंने अपने ही बेटे खो दिए हों।

इसके बदले, मुझे चुनाव हारना बेहतर लगता।
फिर भी मुझे काम जारी रखना पड़ा।
वॉशिंगटन डी.सी. में हुई एक सरकारी सुनवाई में
मैंने अपने संघर्ष के बारे में बताया, जिसके चलते हमें
मिसिसिपी में एक नया राजनीतिक दल शुरु करना पड़ा,
क्योंकि सामान्य डैमौक्रैटिक पार्टी ने
हम कालों को बाहर रखा हुआ था।
हम अब बाहर नहीं रहना चाहते थे।

1964 का डैमोक्रैटिक राष्ट्रीय सम्मेलन
एटलांटिक सिटी, न्यू जर्सी

मैं मिसिसिपी की नई डैमोक्रैटिक फ्रीडम पार्टी की उपाध्यक्ष थी।
उस अगस्त हमने डैमोक्रैटिक पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में
अपना एक प्रतिनिधि मंडल भेजा।
हम यह साफ करना चाहते थे कि
मिसिसिपी से आए डैमोक्रैटिक प्रतिनिधि गैर-कानूनी हैं
क्योंकि वे हम कालों का प्रतिनिधित्व नहीं करते।
हमने मंच पर एक सीट मांगी,
अपने लोकतंत्र में एक आवाज़।
पर हमने सपने भी नहीं सोचा था कि
हमें बाहर रखने के लिए बेहद गंदी हरकत की जाएगी।

राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने
एक प्रेस सम्मेलन बुलाया,
ताकि कैमरा मुझ पर केन्द्रित न रहे।
पर जब मैं प्रत्यय (क्रिडैन्शियल) समिति में बोली
राष्ट्रपति को अपनी चालबाज़ी भारी पड़ी।
टीवी नेटवर्कों ने मेरे बयान को टेप कर प्रसारित किया,
वह भी मुख्य समय में जब सबसे अधिक लोग टीवी देखते हैं।
अगर फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी को अब भी सीट
नहीं दी जाती, मैंने कहा, मैं इस अमरीका से सवाल उठाना चाहती हूँ
क्या यह अमरीका आज़ाद और बहादुर लोगों का घर है?

हमने राष्ट्रपति की वाहवाही चुरा ली।
और हमारे लिए सहयोग, तूफानी बादल-सा उमड़ आया।
जॉनसन डरे कि हम उनसे
दक्षिणी राज्यों का सहयोग और नामांकन छीन सकते हैं।
उन्होंने हूबर्ट हम्फरी को भेजा, जो मिनिसोटा के
नागरिक अधिकारों के पक्षधर सिनेटर थे,
और उप-राष्ट्रपति पद का टिकट चाहते थे।
जॉनसन ने हम्फरी को हुकुम दिया कि वे हमें रोकें।

हम्फरी मुझसे, डॉ. किंग से और हमारे दल के वकील से मिले।
वकील ने हमें कहा कि हमें बात मान लेनी चाहिए,
ताकि हम्फरी जीत सकें।
जब मैंने कहा कि हमारा लक्ष्य एक व्यक्ति से बड़ा है,
उन्होंने मुझे दूसरी बैठकों में आने ही नहीं दिया।
उन्होंने मेरे बिना ही सौदा कर लिया।
तय यह किया गया कि हमें केवल दो प्रतिनिधि मिलेंगे,
शेष सम्मानित सदस्य होंगे।
हम सब बस बैठे हुए देखेंगे - हमारा कोई मत नहीं होगा।
पर हम दो सीटों की खातिर नौ सौ मील दूर नहीं आए थे।
मैंने अपने अध्यक्ष से कहा कि अगर उन्होंने यह सौदा माना
तो मैं उसका गला ही चीर डालूंगी।
उसने यह सौदा नामन्ज़ूर कर दिया।
कम से कम हमारे राज्य का प्रतिनिधिमंडल
अब कालों को बाहर नहीं रख सकता था।

अफ्रीका

मुझे विश्वास ही नहीं होता कि मेरी शोहरत मुझे कितने दूर ले गई -
ठेठ गिनी तक। गायक हैरी बैलाफॉन्टे के साथ।
जब घाना से हमारा विमान चालक एक काला व्यक्ति निकला
मैं समझ गई कि मुझे एक नई सच्चाई के प्रति जागना होगा।
हमने अफ्रीका के बारे में जो थोड़ा बहुत सुना था,
वह पूरी तरह बकवास था।
उस समय गिनी को
फ्रांस से आज़ादी मिली ही थी।
मुझे फक्र हुआ कि काले
अपनी सरकार चला रहे थे।
मैंने इससे पहले कालों को बैंक चलाते नहीं देखा था।
मुझे यह जान दुख हुआ कि गिनी में मेरे साथ
अपने देश के बनिस्बत बेहतर व्यवहार हो रहा था।
जब मैंने कच्ची मूंगफलियों को देखा, तो मैं रो ही पड़ी,
क्योंकि ऐसे ही तो हम मिसिसिपी में खाते थे।
और जब मैंने उन धुनों को सुना जो मेरी नानी
गाया करती थीं, बस शब्द अलग थे।
कई चीज़ों ने मुझे अपने घर की याद दिलाई।
ऐसा लगा मानों मेरे पूर्वजों ने मुझसे बात की हो। मैं साचने लगी
क्या गिनी के लोग मेरे दूर के रिश्तेदार तो नहीं हैं?
मुझे गुस्सा भी आया कि गुलामी ने इन जुड़ावों को तोड़ डाला था।

वाशिंगटन

घर लौटने पर मैं फिर से फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी
की ओर से कांग्रेस के लिए खड़ी हुई -
चुनाव जीतने के लिए नहीं,
बल्की यह सिद्ध करने के लिए
कि इन चुनावों को कूड़ेदान में फेंक देना चाहिए
और गोरों को कांग्रेस की सीट देनी ही नहीं चाहिए। क्यों?
इसलिए क्योंकि मुझे डैमोक्रैटिक टिकट
देने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
और हमारे राज्य में अनेकों कालों को
मत देने से रोक दिया गया था।

एनी डेवाइन, विक्टोरिया एडम्स् और मैं
इस लड़ाई को कांग्रेस में ले गए।
हमने जितनी उम्मीद की थी, उससे
कहीं ज़्यादा सहयोग हमें मिला,
पर उतना नहीं जितने की हमें ज़रूरत थी।

जब फैसला सुनाया गया,
एनी, विक्टोरिया और मैं वहीं थे।
हम पहली काली महिलाएं थीं
जो कांग्रेस भवन में बैठीं।
पर इतिहास बनाने के यश से मेरा माथा नहीं फूल नहीं गया।
मैं 1965 में फिर से ज़मीनी काम पर लौटी।
मैंने सनफ्लावर काउंटी पर मुकदमा किया
कि वह कालों द्वारा मतदाता पंजीकरण
की कोशिशों में अडंगे लगा रही है।
हमने डॉ. किंग के साथ अलाबामा और
मिसिसिपी में जुलूस निकाले।
हमने हज़ारों नए मतदाताओं को पंजीकरण किया,
बावजूद पुलिस के बेरहम मारपीट के।
कांग्रेस को इतनी शर्म आई कि
उसने मतदान अधिकार कानून पारित कर दिया।

ज़ोर से बोलो

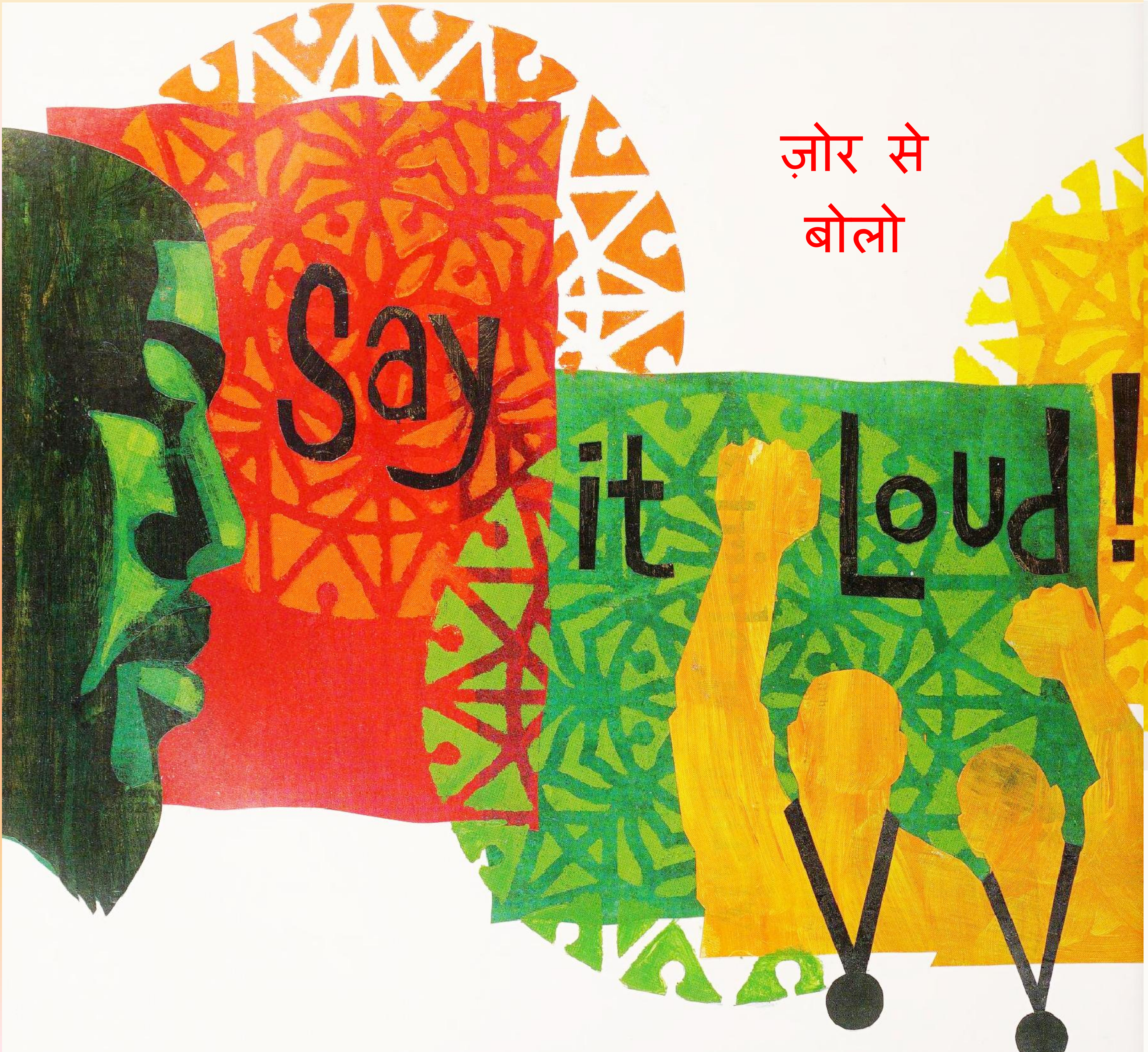

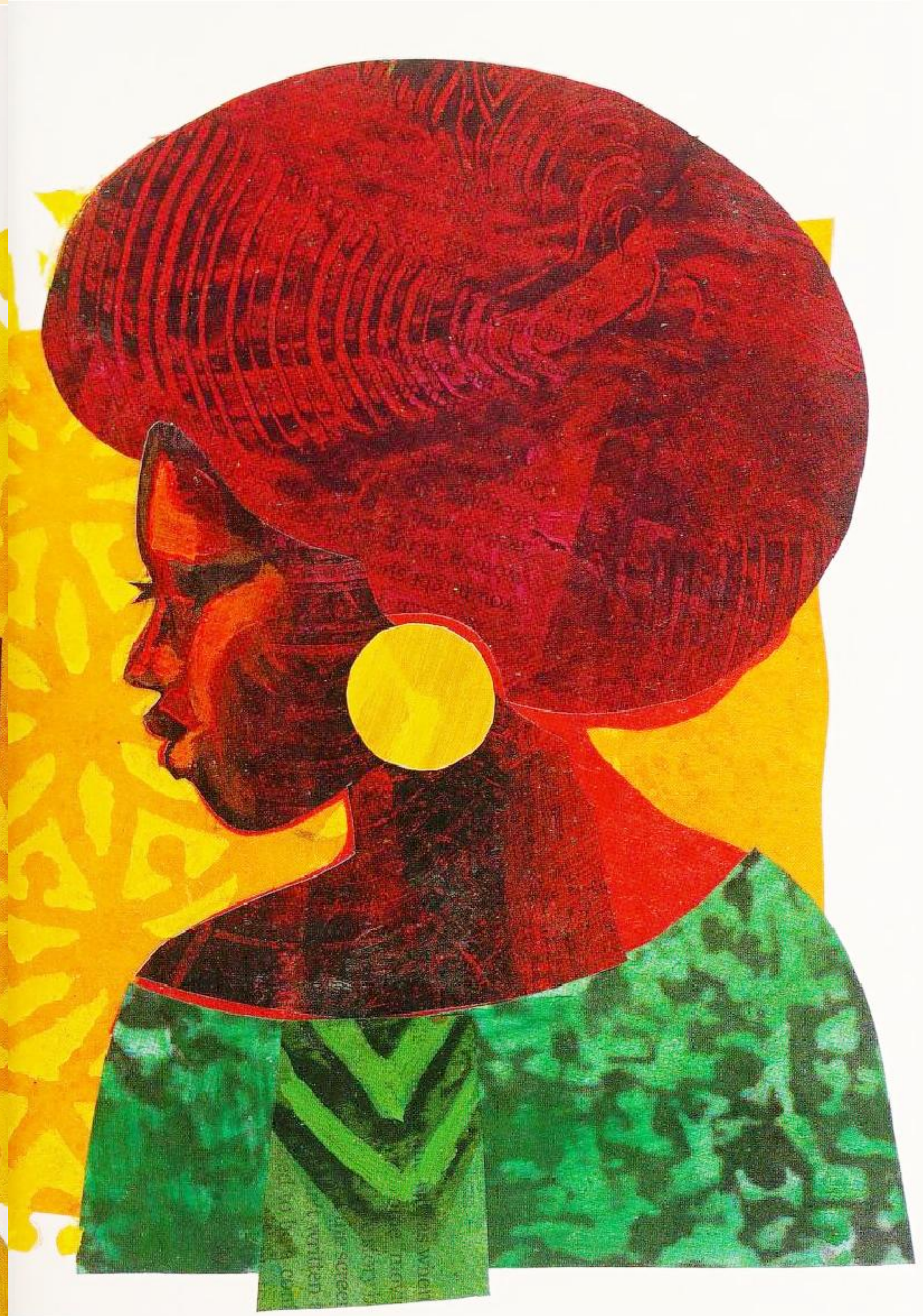

कालों की ताकत

से इट लाउड - आई एम ब्लैक एण्ड आई एम प्राउड
- जेम्स ब्राउन
(ज़ोर से बोलो - मैं काला/काली हूँ, और मुझे इस पर फ़क्र है)

ब्लैक पावर! यह हमारे आन्दोलन का सिंहनाद बना!
मेरे लिए इसका मतलब था गर्वऔर समान अधिकार।
पर स्टोकली कारमाइकल के लिए,
जो एसएनसीसी के अध्यक्ष थे,
इसका मतलब था ज़रूरत पड़ने पर लड़ना
और यह भी कि हमारे सारे कार्मिक काले हों।
यों बॉब ज़ैलर और अन्य कार्यकर्ताओं को, जो लम्बे समय से
हमारे साथ थे हमें खोना पड़ा। उन्हें खोने ने मेरा दिल दुखाया।
मैं उनसे नफ़रत कैसे कर सकती थी?
जिन गोरों ने कालों की आज़ादी के लिए जानें दीं,
उनका मैं शोक मनाती रही थी।
मैं इतने लम्बे समय तक ज़िन्दा रही हूँ कि मैं जानती हूँ
कि किसी भी नस्ल ने शालीन होने का ठेका नहीं ले रखा है।
मुझे उनके लिए अफ़सोस होता है
जो खुद को नफ़रत में लिपट जाने देते हैं।
ऐसा नहीं हो सकता कि मैं किसीसे नफ़रत करूं
और यह उम्मीद रखूं कि मैं खुदा का चेहरा देखूंगी।
खुदा ने सभी नस्लों/देशों को एक ही खून से बनाया है।

अमरीका की समस्या

चन्दा जमा करने के लिए की गई यात्राओं में मैंने
नस्लवाद को अमरीका की समस्या बताया।
आप जो भी दोगे, मैं उपस्थित भीड़ से कहती,
वह केवल मुझे मिसिसिपी में आज़ाद करने के लिए नहीं है।
वह आप सबको मुक्त करने के लिए भी है।
क्योंकि कोई भी इन्सान एक द्वीप नहीं होता।
पर नस्लवादी एक किस्म से चूहे भी हो सकते हैं।
1967 में अपने दूसरे बच्चे के पैदा होने के बाद
मेरी बेटी डॉरथी बीमार पड़ी।
मुझे नब्बे मील पार करने
और मेम्फिस, टैनेसी पहुँचने के बाद ऐसा
अस्पताल मिला जो कालों का इलाज करता हो।
तब अस्पताल के मुख्य दरवाज़े के ठीक बाहर
मेरी डॉरथी ने मेरी बाँहों में दम तोड़ दिया।
वह चली गई - ऐसे ही! क्योंकि वह बीमार थी,
और उसे खाने को पूरा नहीं मिला था।
अब मुझे और पैप को अपने नाती-नातिन को पालन था।

मैंने दुआ की कि उनका भविष्य उज्जवल हो।
1967 में रॉबर्ट क्लार्क ने, जो एक फ्रीडम डैमोक्रैट था,
राज्य की विधान सभा का दरवाज़ा खोला।
वह पहला काला व्यक्ति था जिसे
मिसिसिपी की विधान सभा के लिए चुना गया -
यानी जब गृह युद्ध के बाद गुलामी खत्म
होने का ऐलान किया था, उसके बाद से।
1968 में डॉ. किंग तथा बॉबी कैनेडी,
जो राष्ट्रपति पद के लिए लड़ रहे थे,
दोनों की हत्या कर दी गई।
वे अंधकारमय दिन थे।

आराम नहीं

1968 की गर्मियों में मैं शिकागो में हो रहे

डैमोक्रैटिक राष्ट्रीय सम्मेलन में लॉयलिस्ट
(वफ़ादार) प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में शामिल हुई।
इसका गठन फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी को
कुचलने के लिए किया गया था।
इसके बावजूद मैंने अपनी आवाज़ बुलन्द की
- किसानों की मदद के लिए,
और वियतनाम युद्ध के ख़िलाफ़।
अब मैं एक थकी और बूढ़ी योद्धा थी।
पर मैं आराम नहीं कर सकी - ना, कर ही नहीं सकती थी,
जब तक काले गरीब हों,
स्कूल पृथक-पृथक हों,
काले शिक्षकों के साथ भेदभाव होता हो,
जब तक कानून औरतों को आगे बढ़ने से रोकता हो।
एक दिन एक गोरे आदमी ने मुझसे कहा कि वह
इस बात की सराहना करता है कि मैं वह कर रही हूँ
जिसे करने से वह डरता है।
मुझे पता नहीं कि वह कब से बदलाव चाहता रहा होगा,
पर वह तब तक मुक्त नहीं हो सकता, था
जब तक मैं मुक्त न हो जाऊँ।
मैं हमेशा से यह मानती रही हूँ कि जब हम
अपने साथी इन्सानों की सेवा करते हैं,
हम दरअसल खुदा की ही सेवा करते हैं।

और क्योंकि किसी भी बच्चे को भूख
का अनुभव नहीं होना चाहिए
मैंने फ्रीडम फार्म शुरू किया।
उसमें एक पिग बैंक था, और वहाँ
एक हैड स्टार्ट कार्यक्रम भी चलता था,
ताकि कम आय वाले परिवारों के
बच्चों को शिक्षा में मदद मिले।
मैं झुग्गियों में रहने वाले परिवारों की मदद
आवास के लिए सरकारी ऋण पाने में करती हूँ।
मैं और भी कई चीज़ें करती हूँ, ताकि अपनी ओर से
महिला मुक्ति आन्दोलन के लिए भी कुछ कर सकूँ।
मैंने सनफ्लावर काउंटी के विरुद्ध मुकदमा जीता,
ताकि स्कूल समेकित हों।
1971 में मैं सीनेट का चुनाव हारी।
धांधली के कारण नतीजा मेरे ख़िलाफ़ रहा।
पर उसी साल मिसिसिपी में पचपन काले जीते -
यह दक्षिण के किसी राज्य के लिए रिकॉर्ड था।
1976 में कांग्रेस के ब्लैक कॉकस
ने मुझे आजीवन सेवा के लिए पुरस्कार दिया।
सो हो सकता है कि मैं शायद हारी नहीं, बल्कि जीती!

लेखिका की कलम से

फैनी लू हेमर (1917-1977) नागरिक अधिकार आन्दोलन की आत्मा और आन्दोलन की आवाज़ के रूप में जानी जाती थीं। शायद वे दोनों ही थीं - उनका गायन सशक्त था और वक्तृत्व सरल व स्पष्ट। वे गुलामों की पोती थीं, और मिसिसिपी डैल्टा के एक बटाईदार दम्पति की बीस सन्तानों में सबसे छोटी। हेमर एक ऐसी हीरोइन (नायिका) थीं जिनका नायिका बनने की संभावना कतई नहीं थी।

1917 में मौंटगोमरी काउंटी में जन्मी फैनी को बचपन में पोलियो हुआ था, और छह साल की उम्र से उन्होंने खेतों में कपास चुनने का काम करना शुरु कर दिया था। हालांकि वे अच्छी छात्रा थीं, कक्षा छह के बाद उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। परिवार को खेतों में उनकी ज़रूरत जो थी। घर और खेतों में वे अपनी माँ से अफ़्रीकी-अमरीकी स्पिरिच्युअल्स (कालों के धर्मगीत) सुनती-सीखती रहीं।

1944 में फैनी ने बटाईदार पैप से शादी की और मारलो प्लांटेशन मे रहने चली गईं। मिसिसिपी राज्य ने गरीब स्त्रियों की बच्चेदानी निकालने का जो आदेश दिया था, उसके चलते फैनी की बच्चेदानी बिना उनकी सहमति के निकाल दी गई। फैनी के बच्चे नहीं हो सकते थे सो हेमर दंपत्ति ने दो लड़कियों को गोद लिया।

मारलो के मालिक के घर फैनी खाना पकातीं, साफ-सफाई करतीं। क्योंकि उनमें गणित का कौशल था वे मज़दूरों के समय और चुनी गई कपास का हिसाब भी रखतीं। मालिक तराज़ू में गड़बड़ करता ताकि बटाईदारों को धोखा दे सके। फैनी ऐसा न होने देने के लिए जब संभव होता अपने तराज़ू का इस्तेमाल करतीं।

मिसिसिपी डैल्टा (नदीमुख) में जीवन कठोर और गरीबी इस कदर भयावह थी कि उस जद्दोजहद में फंसी फैनी को यह पता तक न था कि उसे मत देने के अधिकार था। तब एसएनसीसी (स्टूडेन्ट नॉन-वायलेंट कोऑर्डिनेटिंग कमिटी) के ज़मीनी कार्यकर्ता उसके समुदाय को मतदान पंजीकरण के लिए लामबन्द करने आए। जब फैनी ने अपना पंजीकरण करवाना चाहा, वह मतदान परीक्षा में असफल हो गईं। इधर प्लान्टेशन के मालिक ने इस कारण न केवल उन्हें नौकरी से निकाला बल्की परिवार के बिना प्लान्टेशन से बाहर रहने पर मजबूर कर दिया। अंततः कस्बे में एक जगह किराए पर ले, परिवार फिर साथ हो सका।

अब तक फैनी नस्ली समानता के लिए अथक काम करने लगी थीं। 1963 में केवल गोरों के एक कैफे में सेवा की मांग करने पर उन्हें विनोना में ज़बरदस्त पिटाई के बाद जेल में ठूंस दिया गया। इस समय लगी अन्दरूनी चोटों ने उन्हें ताउम्र परेशान किया। इसके बावजूद वे एक समुदाय स्तर की सक्रियकर्मी के स्तर से उठ कर एसएनसीसी की राष्ट्रीय प्रवक्ता बनीं।

हेमर रैलियों व कॉलेज परिसरों में बोलीं। उनकी सशक्त आवाज़ और भावपूर्ण गायन श्रोताओं को उद्वेलित करता था। आज़ादी के संघर्ष में अग्रिम कतारों में चलने वाली फैनी धरनों पर बैठीं, मतदाता प्रशिक्षणों का नेतृत्व किया और डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर, के साथ जुलूसों में चलीं। उन्होंने मिसिसिपी फ्रीडम डैमोक्रैटिक पार्टी के गठन में मदद की। 1964 में उन्होंने डैमोक्रैटिक राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया, तथा काले मतदाताओं के साथ होने वाले भेदभाव का पर्दाफ़ाश किया। फैनी तीन बार चुने जाने वाले पदों के लिए खड़ी हुईं।

नागरिक अधिकार आन्दोलन के अलाव हेमर ने एक शिक्षा-पूर्व हैडस्टार्ट कार्यक्रम की शुरुआत करने में मदद की। अपने समुदाय में भूख की समस्या को कम करने के लिए एक फार्म परियोजना चलाई। उन्होंने कपास चुनने वालों के विरोध आन्दोलन का नेतृत्व किया और राष्ट्रीय महिला कॉकस को चकित कर दिया।

1969 में मिसिसिपी के टूगलू कॉलेज ने उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि दी। 1972 में मिसिसिपी के हाउस ऑफ रेप्रसेंटेटिव ने उनके योगदान को स्वीकार कर उन्हें सम्मानित किया। 1977 में उनकी मृत्यु हुई।

आज उनके गृह कस्बे रूलविले, मिसिसिपी में एक पथ, एक पोस्ट ऑफिस, एक युवा केन्द्र तथा स्मृति उद्यान उनके नाम से है।

कालक्रम

1917

मई तथा जुलाईः टुल्सा, ओकलहोमा में नस्ली दंगे।

अगस्तः ह्यूस्टन, टैक्सास में नस्ली दंगे।

6 अक्तूबरः मौंटगोमरी काउंटी, मिसिसिपी में फैनी लू टाउन्सैंड का जन्म।

10 नवम्बरः मताधिकार चाहने वाले 41 लोगों को व्हाइट हाउस के सामने गिरफ्तार किया गया।

11 दिसम्बरः 13 काले सैनिकों को ह्यूस्टन दंगों में भाग लेने के लिए फांसी दी गई।

1918

21 मईः अमरीका के हाउस ऑफ रेप्रैज़ेन्टेटिव्स ने उन्नीसवां संविधान संशोधन पारित किया, जिससे महिलाओं को भी मत देने का अधिकार दिया गया।

3 जूनः हैमर बनाम डैगनहार्ट मामले में अमरीका की सर्वोच्च अदालत ने कहा कि बालश्रम कानून असंवैधनिक है।

जुलाईः फिलैडैल्फिया तथा चैस्टर, पैन्सिलवेनिया में नस्ली दंगे।

1919

मईः चार्ल्सटन, दक्षिणी कैरोलाइना में नस्ली दंगे।

जुलाईः लॉन्ग व्यू, टैक्सास, वॉशिंगटन डी.सी. और शिकागो में नस्ली दंगे।

अक्तूबरः इलेना, आर्कैन्सॉस में नस्ली दंगे।

1920

4 जनवरीः राष्ट्रीय नीग्रो बेसबॉल टीम की स्थापना

19 जनवरीः अमरीकी नागरिक अधिकार युनियन की स्थापना।

11 फरवरीः महिला मतदाता लीग की स्थापना।

1921

जूनः टुल्सा, ओकलहोमा में नस्ली दंगे।

1923

2 जनवरीः कू क्लक्स क्लैन ने रोज़वुड, फ्लोरिडा के काले बाशिन्दों पर हमला किया और आठ कालों की हत्या कर दी।

15 सितम्बरः ओकलहोमा में कू क्लक्स क्लैन की हिंसा के कारण घेराबन्दी की स्थिति की घोषणा की गई।

1925

8 अगस्तः कू क्लक्स क्लेन के सदस्यों ने वॉशिंगटन डी.सी. में जुलूस निकाला।

1927

2 मईः बक बनाम बैल मुकदमे में 8-1 के मत से सर्वोच्च अदालत ने वर्जीनिया में राज्य द्वारा लागू नसबन्दी कानून को संवैधनिक माना।

1929

29 अक्तूबरः ब्लैक ट्यूसडे, महामंदी की शुरुआत।

1933

4 मार्चः फ्रैंकलिन डी. रूज़वैल्ट अमरीका के बत्तीसवें राष्ट्रपति बने।

1936

अगस्तः नात्ज़ी जर्मनी में ओलम्पिक खेल आयोजित हुए। अमरीका से 312 एथलीट वहाँ पहुँचे, जिनमें 18 अफ्रीकी-अमरीकी थे। ट्रैक व फील्ड प्रतियोगिताओं में (दौड़ने, कूदने, फैंकने की प्रतियोगिताएं), जैसी ओवन्स ने चार स्वर्ण पदक जीते। अमरीका ने कुल चौबीस स्वर्ण पदक जीते। जिनमें आठ अफ्रीकी-अमरीकी एथलीटों को मिले।

1939

3 सितम्बरः ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका तथा कनाडा ने जर्मनी से युद्ध की घोषणा की।

1940

29 फरवरीः हैटी मैकडेनियल ऑस्कर पाने वाली पहली काली स्त्री बनीं।

उन्हें यह पुरस्कार *गॉन विद द विण्ड* पर आधारित फिल्म में एक गुलाम स्त्री का अभिनय करने के लिए दिया गया।

1941

7 दिसम्बरः पर्ल हार्बर पर हमला।

8 दिसम्बरः अमरीका द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल हुआ।

1942

जूनः डैट्रॉइट में नस्ली दंगे।

18 मार्चः दो काले बेसबॉल खिलाड़ियों - जैकी रॉबिनसन तथा नेट मोटलैण्ड को शिकागो व्हाइट सॉक्स के पूर्वाभ्यास में शिरकत करने की अनुमति दी गई।

1943

जूनः डैट्रॉइट में नस्ली दंगे।

अगस्तः हारलम में नस्ली दंगे।

1944

फैनी लू टाउन्सैंड ने पैरी 'पैप' हेमर से विवाह किया।

1945

6 अगस्तः हिरोशिमा पर एटम बम फेंका गया।

1947

ब्रुकलिन डॉजर्स के लिए खेलने के बाद जैकी रॉबिनसन को 'रूकी ऑफ द इयर' का सम्मान दिया गया।

1948

26 जुलाईः राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने अमरीकी सेना में पृथक्करण को खत्म करने का कार्यकारी आदेश दिया।

1954

17 मईः ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एज्युकेशन ऑफ टोपेका कैनसास, में अमरीका की सर्वोच्च अदालत ने स्कूल में पृथक्करण को असंवैधानिक घोषित किया।

1955

1 दिसम्बरः रोज़ा पार्कस् को मौंटगोमरी, अलबामा में बस की पिछली सीट पर बैठने से इन्कार करने पर जेल में डाला गया। घटना के बाद वहाँ साल भर तक बसों का बहिष्कार किया गया। तब जाकर बसों में पृथक्करण को असंवैधनिक घोषित किया गया।

1957

सितम्बरः आर्केन्सॉस के राज्यपाल ऑरवल फाउबस ने नौ काले छात्रों को लिटिल रॉक हाईस्कूल में पढ़ने से रोकने के लिए राष्ट्रीय गार्ड का उपयोग किया। राष्ट्रपति ड्वाइट आइज़नहावर ने संघीय सेना भेजी ताकि काले छात्र उस स्कूल में पढ़ सकें।

1960

1 फरवरीः चार काले कॉलेज छात्रों ने ग्रीन्सबरो, नॉर्थ कैरोलाइना के उस लंच काउंटर पर धरना दिया, जो कालों को सेवाएं नहीं देता था।

6 मईः 1960 के नागरिक अधिकार कानून पर राष्ट्रपति आइज़नहावर ने दस्तख़त कर उसे कानून बनाया। इस कानून में मतदान में भेदभाव के विरुद्ध प्रावधान शामिल थे।

1961

जनवरीः जॉर्जिया विश्वविद्यालय में नस्ली दंगे।

20 मईः मौंटेगोमरी, अलबामा में फ्रीडम राइडर्स पर गोरी भीड़ ने हमला किया।

24 मईः जैकसन, मिसिसिपी में सताइस फ्रीडम राइडर्स को गिरफ्तार किया गया।

16 अगस्तः रैवरेण्ड मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने फ्लोरिडा में कालों के मताधिकार को बढ़ावा देते हुए भाषण दिया।

29 नवम्बरः मिसिसिपी के एक बस स्टेशन में गोरों की भीड़ ने फ्रीडम राइडर्स पर हमला किया।

12 दिसम्बरः एल्बनी, जॉर्जिया में एक प्रदर्शन में मार्टिन लूथर किंग, जूनियर समेत सात सौ लोगों को गिरफ्तार किया गया।

एक छोटे ट्यूमर को हटाने के बहाने फैनी लू हेमर की बच्चेदानी, बिना उनकी अनुमति के निकाल दी गई।

1962

3 अप्रेलः अमरीकी रक्षा विभाग ने नैशनल गार्डस् के सिवा सभी आरक्षित सैन्य इकाइयों में पूर्ण एकीकरण की आज्ञा दी।

अगस्तः फैनी लू हेमर ने रुलविले, मिसिसिपी में अपने पहले मतदाता पंजीकरण आयोजन में हिस्सा लिया।

अक्तूबरः राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी ने मिसिसिपी विश्वविद्यालय में दंगों को बन्द करने के लिए संघीय सेना भेजी। ये दंगे वहाँ के पहले काले छात्र जेम्स मैरेडिथ को पढ़ने देने के विरुद्ध हो रहे थे।

16 से 28 अक्तूबरः क्यूबा का मिसाइल संकट।

1963

फैनी लू हेमर मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करवाने में सफल हुई।

9 से 12 जूनः फैनी लू हेमर को पुलिस हिरासत में बेरहमी से पीटा गया।

10 जूनः राष्ट्रपति कैनेडी ने स्त्री-पुरुषों को समान काम के लिए समान भुगतान के कानून पर दस्तख़त किए।

11 जूनः राष्ट्रपति कैनेडी ने पृथक्करण को नैतिक रूप से ग़लत घोषित किया और कानूनी कार्रवाई की मांग की।

28 अगस्तः दो लाख लोगों ने वॉशिंगटन डी.सी. में समान अधिकारों के लिए प्रदर्शन किया।
डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने लिंकन मेमोरियल पर अपना 'मेरा एक सपना है' वाला भाषण दिया।

10 सितम्बरः बीस काले छात्रों ने अलबामा के एकीकृत सार्वजनिक स्कूल में प्रवेश लिया।

15 सितम्बरः बर्मिनघम, अलबामा में एक चर्च में हुई बमबारी में चार काली युवतियाँ मारी गईं।

12 नवम्बरः राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या कर दी गई।

1964

फैनी लू हेमर मिसिसिपी की डैमोक्रैटिक प्राइमरी में कांग्रेस के लिए खड़ी हुईं।

23 जनवरीः अमरीकी संविधान के चैबीसवें संशोधन की पुष्टि की गई, जिससे संघीय चुनावों में मतदाता कर हटाया गया।

19 जूनः अट्ठाइस दिनों के फिलिबस्टर के बाद सिनेट ने नागरिक अधिकार कानून, 1964 को पारित किया।

2 जुलाईः राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने नागरिक अधिकार कानून पर हस्ताक्षर किए।

अगस्तः न्यू जर्सी तथा शिकागो में नस्ली दंगे हुए।

22 अगस्तः टीवी उपस्थिति द्वारा फैनी लू हेमर ने डैमोक्रैटिक राष्ट्रीय सम्मेलन की क्रिडैंशियल समिति को संबोधित किया।

1965

2 जनवरीः डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने सेल्मा, अलबामा में मतदाता पंजीकरण आरंभ किया।

1 फरवरीः अलबामा के प्रदर्शन के दौरान डॉ. किंग समेत सात सौ लोगों को गिरफ्तार किया गया।

21 फरवरीः मैल्कम एक्स की हत्या हुई।

8 मार्चः वियतनाम में अमरीकी सेना का पहला जत्था पहुँचा।

21 से 25 मार्चः मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने सेल्मा से मौंटोगोमरी तक 25,000 लोगों के जुलूस का नेतृत्व किया।

अगस्तः लॉस एंजलीस में नस्ली दंगे हुए, जिन्हें अक्सर वॉट्स दंगे कहा जाता था।

6 अगस्तः 1965 के मताधिकार कानून में मतदाताओं पर जबरन साक्षरता परीक्षा देने का जो दबाव डाला जाता था, उसे गैर-कानूनी घोषित किया गया। राष्ट्रपति जॉनसन ने इस पर हस्ताक्षर किए।

1967

30 अगस्तः अमरीकी सीनेट ने थुरगुड मार्शल को सर्वोच्च अदालत का न्यायाधीश बनाने की पुष्टि की।

फैनी लू हेमर ने अपनी आत्मकथा *टु प्रेज़ आवर ब्रिजेस्* प्रकाशित की।

1968

4 अप्रेलः डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर की मैम्फिस, टैनेसी में हत्या कर दी गई।

11 अप्रेलः राष्ट्रपति जॉनसन ने नागरिक अधिकार कानून, 1968 पर हस्ताक्षर किए,
जिसमें जिन्सों की बिक्री, किराए, आवास के लिए कर्ज़ आदि में भेदभाव की मनाही की गई।

6 जूनः सीनेटर व राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रॉबर्ट एफ. कैनेडी की हत्या कर दी गई।

1971

फैनी लू हेमर ने मिसिसिपी राज्य के सीनेट के लिए चुनाव लड़ा।

1972

मिसिसिपी के प्रतिनिधि सदन ने सर्व-सम्मति से राज्य तथा देश में
नागरिक अधिकारों के मुद्दे पर फैनी लू हेमर के योगदान को स्वीकारा।

1976

फरवरीः पहला अफ्रीकी-अमरीकी माह मनाया गया।

1977

14 मार्चः फैनी लू हेमर की मृत्यु हुई।

कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड ने बच्चों तथा किशोरों के लिए पैंतीस से भी अधिक किताबें लिखीं हैं, जिनमें कॉल्डीकॉट सम्मान प्राप्त पुस्तक *मोसेस्, हैरिएट टबमैन लैड हर पीपल टू फ्रीडम* शामिल हैं। वे उत्तरी कैरोलाइना में रहती हैं।

एक्वा होम्स, एक बेहतरीन कलाकार हैं, जिन्हें अपने काम की प्रेरणा अपने परिवार, बचपन, रिश्तों, उम्मीद तथा आस्था से मिलती है। 2013 में उनका नाम बॉस्टन आर्ट कमीशन को सुझाया गया था, जो शहर में सार्वजनिक कलाकृतियों की परियोजना को देखती है। *वॉयस आफॅ फ्रीडम* उनकी पहली चित्रकथा है। वे बॉस्टन में रहती हैं।